आज़ादी का अमृत महोत्सव

कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, हरियाणा

एवं

कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड, कुरुक्षेत्र

के सयुंक्त तत्वाधान में

राष्ट्रीय आधुनिक मूर्तिशिल्प शिवर 2021

पाषाण प्रसंग- 3

का आयोजन

स्त्रोत, सामग्री, श्रम साधना

75वें आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान कुरूक्षेत्र, ब्रहमसरोवर पुरूषोत्तम पुरा बाग के मध्य में राष्ट्रीय ध्वज के चारों ओर स्थापित इन इक्कीस आधुनिक विशाल मूर्तिशिल्पों में प्रयुक्त पत्थर हरियाणा एवं राजस्थान की सीमा के समीपस्थ गांव भैंसलाना की खानों से कला एवं सांस्कृतिक अधिकारी, मूर्तिकला हृदय कौशल के अथाह श्रम एवं उत्साह के साथ लाया गया। अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव–2021 के दौरान पुरूषोत्तम पुरा बाग में इक्कीस युवा होनहार कलाकारों ने 21 सहायकों के साथ इन मूर्तिशिल्पों का निर्माण मात्र दिन–रात की लगन से 21 दिनों में किया। इनके निर्माण दौरान माननीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री, श्री जी. किशन रेड्डी, कमिशनर, अम्बाला मण्डल, श्रीमति रेणु फुलिया व प्रधान सचिव, कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, हरियाणा, डॉ0 डी. सुरेश एवं निदेशका, श्रीमति प्रतिमा चौधरी ने इन प्रतिमाओं एवं शिल्पकारों की भूरि–भूरि सराहना की। उनकी अभिरूचि एवं गहन दिलचस्पी ही, इस पुस्तिका के सृजन की प्रेरणा बनी।

मनोहर लाल
मुख्यमंत्री हरियाणा

स्वर्णिम भविष्य के पथ पर
अदभुत अतीत के पत्थर

हरियाणा विश्व का एकमात्र भू–भाग है, जहॉ युद्ध स्थल पर मंडराते महाकाल के बीच शाश्वत जीवन दर्शन का उद्घोष हुआ। इसलिए आश्चर्य नहीं कि देवभूमि कुरूक्षेत्र के पुरूषोत्तम पुरा बाग में बने खूबसूरत मूर्तिशिल्प उद्यान में राष्ट्रीय ध्वज के चारों तरफ 21 खूबसूरत/अदभुत विशाल आधुनिक मूर्तिशिल्पों को स्थान दिया गया है जो 75वें आजादी के अमृत महोत्सव, गीता एवं भारतीय संस्कृति के अनेक महत्वपूर्ण प्रतीकों व पहलुओं को दर्शाते हैं। 29.11.2022 को पुरूषोत्तम पुरा बाग में अन्तर्राष्ट्रीय गीता जयन्ती के दौरान लगाई गई स्थाई प्रदर्शनी में इस तथ्य से अवगत होने पर मैं भावाविभूत हो गया। मुझे बताया गया कि इन कृतियों के निर्माण के लिए हरियाणा राज्य के अतिरिक्त उड़ीसा, तेलंगाना, राजस्थान, असम के 21 आधुंनिक कला शिल्पियों ने 21 दिन तक दिन–रात अथक परिश्रम किया। इन होनहार युवा कला शिल्पियो के साथ हृदय कौशल के नेतृत्व में बनाए गए खूबसूरत मूर्तिशिल्पों की एवं कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है। ये चिरस्थाई मूर्तिशिल्प सदियों तक राज्य एवं राष्ट्र का 75वें आजादी के अमृत महोत्सव के आयोजन की स्थाई गवाह बनेंगी। मैं आशा करता हूं की इस विवरण/पुस्तिका के माध्यम से इन कलाकारों के कौशल से पूरे देश व विदेश के नागरिक अवगत हो पाएंगे। कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग एवं कुरूक्षेत्र विकास बोर्ड के संयुक्त तत्वाधान में किया गया यह कार्य अतुलनीय प्रशंसा का पात्र है। इससे राज्य में लुप्त होती आधुनिक मूर्तिकला के साथ–साथ राज्य के युवा कलाकारों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक विशेष पायदान मिलेगा। सदियों तक ज़िंदा रहने वाली यह अदभुत कला राज्य का गौरव एवं मान–सम्मान बढ़ाएगी। इस प्रकल्प के लिए मेरी शुभकामनाएं।

मनोहर लाल
मुख्यमंत्री हरियाणा

कंवर पाल गुर्जर
कला एवं संस्कृति मंत्री

पाषाण कला कृतियां-सभ्यता-संस्कृति की जीवंत प्रतीक

किसी भी सभ्यता व संस्कृति की सुगमतम परिचायक उसकी कलाएं होती हैं और राष्ट्र की संस्कृति उसके विकास की नींव की ईंट होती है। प्राचीन भारतीय सभ्यता का उद्‌गम स्थल होने के कारण इसकी गौरवशाली धरोहर को संजोने का दायित्व हरियाणा पर किंचित अधिक रहता है। पुरूषोत्तम पुरा बाग, ब्रह्मसरोवर इसका परिचायक है।

हमारे यशस्वी मुख्यमंत्री, माननीय मनोहर लाल जी ने 29.11.2022 को पुरूषोत्तम पुरा बाग में राष्ट्रीय ध्वज के चारों ओर अन्तर्राष्ट्रीय गीता जयन्ती के लोकार्पण के अवसर पर लगाई गई 21 आधुनिक कला–शिल्पों में अत्यंत रूचि दिखाई। इससे उत्पन्न उत्साह इस विवरण/पुस्तिका की रचना का आधार है।

कलाकृतियां 75वें आजादी का अमृत महोत्सव, श्रीमद् भगवद गीता एवं हमारे कई अन्य सांस्कृतिक स्तंभों को जीवंत करती है। इनसे भावी पीढ़ियों को हमारे गौरवशाली अतीत से अवगत करवाने के अतिरिक्त, विलुप्त हो रही समकालीन मूर्तिकला को एक नई पहचान भी मिलेगी। इन अनुपम कलाकृतियों को गढ़ने वाले शिल्पियों का एवं नेतृत्व कर रहे हृदय कौशल का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। यह मूर्तिशिल्प पुस्तिका देशभर के मूर्तिकारों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। सभी कलाकार शुभकामनाओं सहित बधाई के पात्र हैं।

कंवर पाल गुज्जर
संस्कृति मंत्री

सौंदर्य का सार सृजन

कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, हरियाणा ने राज्य में कला एवं संस्कृति के विकास की कसौटी को और मजबूत कर आधुनिक मूर्तिकला की पगडंडी को हाई–वे का रूप देने का प्रयास किया है, जिसमें उच्च चिन्तन, स्वाधीनता का भाव, सौंदर्य का सार, सृजन की आत्मा और जीवन की सच्चाईयों, प्रतियोगिताओं के संग प्रतिभाओं को निखारने का दायित्व में विभाग निरन्तर प्रयासरत है। अन्य कलाओं के विकास के साथ लुप्त होती मूर्तिकला में समृद्ध चिरकाल तक हरियाणा राज्य की कला एवं संस्कृति को स्थायित्व प्रदान करते हुए सभी कला विधाओं में विभाग गति, संघर्ष और कर्मठता से कार्य कर रहा है। विभाग ने अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के दौरान पुरूषोत्तम पुरा बाग में राष्ट्रीय आधुनिक मूर्तिशिल्प शिविर का आयोजन राज्य के युवा कलाकारों हेतु किया। भैंसलाना मारबल चट्टानों से बनाए गए 21 आधुनिक खूबसूरत मूर्तिशिल्प चिरस्थाई रूप में स्थापित किए गए हैं। यह अत्याधिक सराहना का विषय है। मुझे यह बताते हुए गर्व महसूस होता है कि ये रचनाएं न केवल दर्शकों पर एक उल्लेखनीय कलात्मक प्रभाव डालती हैं बल्कि पूरी तरह से हमारे राज्य की संस्कृति में समृद्धि प्रदर्शित करती हैं। मैं इन रचनात्मक कृतियों के माध्यम से हरियाणा की गौरवशाली विरासत को प्रदर्शित करने के इस ऐतिहासिक पहल में प्रत्येक युवा मूर्तिकार को बधाई देना चाहता हूँ। श्री हृदय कौशल को इस परियोजना के प्रति समर्पण के लिए धन्यवाद व शुभकामनाएं देना चाहूंगा। इसके अलावा मैं इन शिल्प संरचनाओं के निर्माण में शामिल प्रत्येक कलाकार मूर्तिकार को दिन–रात अथक परिश्रम व उनकी बेजौड़ रचनात्मकता और कलात्मकता के प्रयासों के लिए सराहना व शुभकामनाएं देता हूँ।

डॉ0 डी सुरेश
प्रधान सचिव, कला एवं सांस्कृतिक कार्य
विभाग, हरियाणा।

उत्तम प्रयास

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि दिनांक 30.11.2021 से 20.12.2021 तक अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के दौरान कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग द्वारा कुरूक्षेत्र विकास बोर्ड, कुरूक्षेत्र के संयुक्त तत्वाधान में पुरूषोत्तम पुरा बाग, ब्रह्मसरोवर पर भारतवर्ष व हरियाणा राज्य के 21 युवा कलाकारों द्वारा 21 आधुनिक खूबसूरत मूर्तिशिल्प गढ़े गए। इन चिरस्थाई शिल्पों को पुरूषोत्तम पुरा बाग में राष्ट्रीय ध्वज के चारों ओर चिरस्थाई सुसज्जित कर लोकार्पण हमारे माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर जी के कर–कमलों द्वारा किया 29.11.2022 को किया गया। इस सम्पूर्ण प्रयास को शब्दों एवं चित्रों में व्यक्त करने के लिए एक पुस्तिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है। यह प्रयास निश्चित रूप से इस कार्य को दृढ़ता प्रदान करेगा। मैं कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, हरियाणा तथा कुरूक्षेत्र विकास बोर्ड, कुरूक्षेत्र को लुप्त होती मूर्तिकला के विकास हेतु एवं चिरस्थाई प्रदर्शन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूँ। इस सतत् प्रयास से हरियाणा राज्य की कला एवं कलाकारों का विकास सुमार्ग पथ विकसित होगा। परियोजना से जुड़े सभी जन को साधुवाद एवं अनन्त शुभकामनाएं।

विजय दहिया
सदस्य सचिव
कुरूक्षेत्र विकास बोर्ड, कुरूक्षेत्र

प्रतिभा प्रकल्प

हरियाणा राज्य के कुरूक्षेत्र विकास बोर्ड एवं कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग के संयुक्त तत्वाधान में हरियाणा के कला एवं सांस्कृतिक अधिकारी (मूर्तिकला) श्री हृदय कौशल के नेतृत्व में एक राष्ट्रीय शिविर एवं संगोष्ठी का आयोजन करते हुए पुरूषोत्तम पुरा बाग, ब्रह्मसरोवर, कुरूक्षेत्र में चिरकाल तक स्थापित किए जाने वाले 21 आधुनिक खूबसूरत मूर्तिशिल्पों का निर्माण किया गया। इस छोटे से विभाग में इतनी महती जिम्मेदारी निभाने को लेकर चिंता रेखाएं उभरी, किंतु मुझे कहकर खुशी है कि विभाग के सतत् प्रयासों एवं भारत सहित हरियाणा राज्य के इक्कीस युवा एवं होनहार शिल्पकारों ने इक्कीस दिन तक दिन–रात अथक परिश्रम के साथ असाधारण प्रतिभा का परिचय देते हुए ऐसी विशाल खूबसूरत आधुनिक चिरस्थाई मूर्तिशिल्पों का निर्माण किया जो न केवल हरियाणा की संस्कृति को उभारती हैं, बल्कि देखने वाले के हृदय में अमिट छाप भी छोड़ती है। इस पूरे प्रकल्प को सुंदर पुस्तिका का रूप दिया जाना निश्चय रूप से कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग के लिए उत्साहवर्धक है। सभी इक्कीस युवा कलाकारों और सहायकों को कला के पथ पर नीवन प्रयोगों एवं राज्य की संस्कृति में विकास हेतु हार्दिक साधुवाद एवं शुभकामनाऐं देता हूँ।

महावीर कौशिक
निदेशक, कला एवं सांस्कृतिक कार्य
विभाग, हरियाणा।

गौरवशाली विरासत का संयोजन और परिकल्पना

30 नवम्बर 2021 से 20 दिसम्बर 2021 तक इक्कीस दिनों में 21 कलाकारों द्वारा दिन–रात के अथक परिश्रम द्वारा हरियाणा राज्य की कला व संस्कृति से ओत–प्रोत गीता व आजादी के अमृत महोत्सव योग का ज्ञान देते हुए भव्य एवं सौंदर्यपूर्ण 21 समकालीन खूबसूरत मूर्तिशिल्पों का निर्माण कर हरियाणा के पुरूषोत्तम पुरा बाग, ब्रह्मसरोवर, कुरूक्षेत्र में राष्ट्रीय ध्वज के चारों ओर चिरस्थाई रूप में प्रदर्शित किया गया। इन शिल्पों की अत्यधिक सराहना की गई। जिससे पुरूषोत्तम पुरा बाग की सुंदरता पर चार चांद लगे। मुझे यह बताते हुए गर्व महसूस होता है कि ये शिल्प चिरकाल तक कुरूक्षेत्र में ब्रह्मसरोवर पर दर्शकों–पर्यटकों को कलात्मक प्रभाव से प्रभावित करेंगे साथ ही स्थाई चिन्हों के रूप में अपनी भूमिका भी निभाएंगे। राष्ट्र में राज्य का मूर्तिकला विधा में यह एक अनूठा कदम है। इसमें मूर्तिशिल्पों व राज्य के शिल्पकारों का कला के क्षेत्र में विकास होगा एवं लुप्त होती मूर्तिकला के विकास में पायदान साबित होगा। यह गौरवशाली विरासत राज्य को विश्व पटल पर प्रदर्शित करेंगी, ऐसी मेरी कामना है। श्री हृदय कौशल, कला एवं सांस्कृतिक अधिकारी मूर्तिकला के नेतृत्व में सभी बधाई के पात्र हैं। उनके कठिन परिश्रम व कलात्मक दृष्टिकोण ने पुरूषोत्तम पुरा बाग को सौंदर्य प्रदान किया। समारोह में डॉ0 डी सुरेश, प्रधान सचिव, कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग को इस पहल में सुमार्ग देने एवं इस परियोजना को सुचारू रूप से पूर्ण करने तथा श्री हृदय कौशल को इस परियोजना के प्रति समर्पण के लिए हार्दिक धन्यवाद देना चाहुंगी। कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग एवं कुरूक्षेत्र विकास बोर्ड का यह कदम एक साथ उन्नति करे ऐसी कामना है। यह सुन्दर पुस्तिका निश्चित तौर पर दोनों विभागों के सभी सदस्यों के लिए उत्साहवर्धक एवं प्रेरणास्त्रोत रहेगी। इस परियोजना से जुड़े सभी सदस्यों को सह हृदय साधुवाद व शुभकामनाएं देती हूँ।

प्रतिमा चौधरी
पूर्व निर्देशिका, कला एवं सांस्कृतिक कार्य
विभाग, हरियाणा।

उर्जा

कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग द्वारा समकालीन मूर्तिकला के संदर्भ में "पाषाण प्रसंग" के दौरान 21 युवा मूर्तिकारों ने सौंदर्यपूर्ण मूर्तिशिल्प बनाकर 1966 से लेकर अब तक हरियाणा में सबसे बड़ा राष्ट्रीय मूर्तिशिल्प शिविर लगाकर मूर्तिकला के क्षेत्र के इतिहास में अपना नाम दर्ज कराया है। राज्य में लुप्त होती मूर्तिकला के विकास के लिए कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग के प्रयास और कलाकारों का सहयोग अविस्मरणीय है। 21 कलाकारों तथा 21 सहायकों द्वारा 21 दिनों तक दिन–रात कठोर परिश्रम कर इस लुप्त होती कला को पुर्नजीवित करने में सक्षम रहे। 84 हाथ 84 योजन के रूप में निरंतर राज्य की सांस्कृतिक विकास में जुझारू रूप से लगे रहे। राष्ट्र में हरियाणा राज्य के कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग का नाम रोशन हुआ। लुप्त होती मूर्तिकला के विकास पथ में एक सराहनीय कदम है। मैं कामना करता हूँ कि विभाग और युवा मूर्तिकार दिन दोगुणी और रात चौगुणी उन्नति करें और राज्य का राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नाम रोशन करें। सभी कलाकारों को नवीनतम प्रयोगों एवं कला के विकास हेतु साधुवाद एवं हार्दिक शुभकामनाएं।

हृदय कौशल
कला एवं सांस्कृतिक अधिकारी (मूर्तिकला)

शिल्पकारों का मनभावन पत्थर काला भैंसलाना की खूबियां

हृदय कौशल

मूर्तिशिल्प में चिरकाल तक स्थाई रहने वाला पत्थर एक महत्वपूर्ण माध्यम है। यह पत्थर अनेक किस्मों में पाया जाता है। ये मुख्य रूप से तीन प्रकार का होता है। Igenous (आग्नेय), Sedimentary (अवसादी) and Metamorphic (कायान्तरित)। काला संगमरमर एक शैल है जो चूना पत्थर के कायान्तरण का परिणाम है। यह कैलसाइट है, जो कैलश्यिम कार्बोनेट का स्फटिकीय रूप है। यह मुलायम पत्थर शिल्पकला के लिए उत्तम माना जाता है।

हरियाणा से सटे राजस्थान के जयपुर जिले में कोटपुतली के पास भैंसलाना काले पत्थर की सात खाने हैं। इन खानों को 1,2,3 नंबर से जाना जाता है। मूर्तिशिल्पों के लिए इन्हीं खानों से यह पत्थर निकाला गया है।

भैंसलाना मारबल की खूबियां

- इस पत्थर में चार से पांच तरह के रेशे व रंग से शिल्प के सौंदर्य में चार चांद लग जाते हैं।
- काला भैंसलाना मार्बल से बने शिल्प दूर से ही आकर्षित करते हैं।
- कलात्मक दृष्टि से इसमें भरपूर सौंदर्य उभारा जा सकता है।
- इसकी पॉलिश की चमक स्थाई रहती है तथा यह दर्पण के समान चमकता है।
- तीन चार रंगों का संयोजन होने के कारण इसमें आकर्षण पैदा होता है।
- ग्रेनाईट के मुकाबले यह नर्म होता है। इससे शिल्प गढने में कम समय लगता है।
- सफेद, गुलाबी, हरा व अन्य बलुवा पत्थर तथा ग्रेनाईट की अपेक्षा इसमें गढ़ी मूर्ति कलात्मक दृष्टि से उच्च मानी जाती है।
- यह बारिश में धुल कर साफ व सुंदर दिखते हैं। इस पत्थर पर काई भी नहीं जमती।
- इस पत्थर का छोटे से छोटा टुकड़ा तथा रज कण भी प्रयोग में आते हैं।
- यह लोचदार पत्थर कभी अपना रंग नहीं खोता।
- यह पत्थर, जल, दाग प्रतिरोधक, विभिन्न रेशों वाला और चमकदार होता है। चांदनी रात में इसका आकर्षण देखते ही बनता है।
- यह पत्थर छोटी–मोटी त्रुटियों को पुनः दुरस्त करने में भी सक्षम है।
- कैलशियम की मात्रा अधिक होने के कारण इसकी चमक दिन–प्रतिदिन स्थाई होती जाती है।
- यह मूर्तिकला शिविरों में प्रयोग में लाया जाता है। कला विद्यार्थी इस पर जमकर अभ्यास करते हैं।
- इस पत्थर में मुख्य रूप से चार प्रकार के मूर्तिशिल्प, जैसेः जलहरी (शिवलिंग), नंदी, महाकाली, गणेश, शनिदेव अधिक बनते हैं।
- इस पत्थर में मुख्य रूप से बारह ज्योर्तिलिंग बनाए जाते हैं, जैसेः ज्योचा (डोचा)– यह पिंड रूप में साधारण शिवलिंग होता है। आरगा– इसमें पिंड की बजाय केवल आधार होता है। जलहरी–यह पूर्ण शिवलिंग होता है। श्रद्धालु इसे वाराणसी में भी विसर्जित करते हे।
- इसमें कुछ कमियां भी पाई जाती हैं। जिन्हें लोक भाषा में सापड़ी कहते हैं। यह बहुत कठोर होती है, जिसे काटने में कई बार औजार टूट जाते हैं। गड़स– यह एक कठोर गांठ होती है जो शिल्प में बाधा उत्पन्न करती है। पीलाधार एवं सफेदधार– इनका प्रयोग मूर्ति में बाधा उत्पन्न करता है। निपुण कलाकार ही इसको अच्छे से प्रयोग में ला सकते हैं। चटका– मूर्ति बनाते समय छोटी–छोटी पपड़ियां चटकती रहती हैं। जिससे मूर्तिशिल्प गढ़ने में कठिनाई होती है।

हृदय कौशल

कला एवं सांस्कृतिक कार्य अधिकारी (मूर्तिकला)

शंख प्रतिध्वनि

शंख रूपी इस मूर्तिशिल्प में शंख के साथ वर्गाकार सुदर्शन चक्र के माध्यम से चारों दिशाओं में युद्ध के दौरान कौरव/पांडवों की प्रतिदिन प्रारम्भ व युद्ध विराम के समय होने वाले शंखनाद और सूर्यास्त समय के प्रतीक को कृति में उकेरने का सतत् प्रयास किया है। इस दो मुखी शंख में कौरव और पांडवों को चिन्हित किया है एवं शिल्प के मध्य में वर्गाकार चक्र को निरंतर विकास का प्रतीक बनाया है। सौंदर्य व पवित्रता के भाव को दर्शाता इस मूर्तिशिल्प में मूल भाव से कहा है कि संयम, समय, अनुशासन के पक्ष में आधुनिक काल की भगदड़ में पड़ी मानव सभ्यता की अधिकतर समस्याओं का निदान गीता के गर्भ में छिपा है।

Amit Kumar

Jind, Haryana

अमित कुमार

राज्य के खरक जाटान रोहतक के ग्रामीण पृष्ठ भूमि से सम्बन्ध रखते हैं। ललित कला निष्णात की उपाधि कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से लेकर शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापन के साथ–साथ आधुनिक मूर्तिशिल्प में नवीन प्रयोगों एवं अनुसंधानों पर प्रयास कर रहे हैं।

समय, ज्ञान, संस्कृति

समय के चक्र को गीता के साथ संजय और धृतराष्ट्र के संवाद को काल्पनिक मूर्त रूप दिया है। संजय शिखर पर बैठ अपनी दिव्य दृष्टि से धृतराष्ट्र को युद्ध की स्थिति बता रहे हैं। शिल्प में सांकेतिक, सामायिक रेत घड़ी को गीता के साथ कलाकार ने अपनी कल्पना से समय की महत्वता को दर्शाया है। युद्ध के मध्य दिए जाने वाले श्री कृष्ण के गीता उपदेश को सामायिक/रेत घड़ी के साथ गीता ज्ञान को निरन्तरता के साथ आम जन–मानस को समय अनुसार धैर्य का संदेश दिया है।

Anup

Bhiwani, Haryana

अनूप

राज्य के भिवानी की पृष्ठ भूमि से सम्बन्ध रखते हैं। ललित कला निष्णात की उपाधि चण्डीगढ़ ललित कला महाविद्यालय से लेकर मूर्तिकला के क्षेत्र में नवीन प्रयोगों के साथ–साथ स्वतंत्र रूप से शिल्प के क्षेत्र में बखूबी काम कर रहे हैं।

महाभारत और पंच स्तम्भ

इस आधुनिक मूर्तिशिल्प में पांच स्तम्भों का पांच पांडवों के साथ अदभुत संयोजन दिखाया गया है। स्वर्ग की सीढ़ियों का रास्ता और कर्तव्य, निष्ठा, एकाग्रता, बल व निपुणता को कलाकारा ने अपनी कल्पना में छिपे पांच स्तम्भों को सहनशीलता व सहयोग के साथ अपने लक्ष्य को निपुणता से प्राप्त करने की प्रेरणा दी है। मध्य में अर्जुन को मुख्य स्तम्भ तथा चारों तरफ अन्य चार पांडवों को काल्पनिक रूप से प्रदर्शित करने का प्रयास किया है। साथ ही चारों तरफ शंख, पाशे, कुंभ एवं गज व अश्व को भी सांस्कृतिक एकात्मता को ज्यमितीय अवधारणा के आधार पर प्रस्तुत कर अलंकृत किया है।

Arundhati Chaudhary

Assam, Guwahati

अरुणधती चौधरी

असम के गौहाटी से सम्बन्ध रखने वाली ललित कला निष्णात की उपाधि असम से प्राप्त कर कला दीर्धा के संचालन सहित मूर्तिकला के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से बखूबी काम करने के साथ–साथ निरंतर नीवन प्रयोगों में व्यस्त हैं।

भीमास्त्र, कलात्मक ज्योमितीय आयाम

इस मूर्तिशिल्प में 10000 हाथियों की ताकत वाले शूरवीर भीम के प्रहार को और अधिक शक्तिशाली करने वाली गदा–वृगोधर्म– को सूर्य कुंड में गलाने के लिए डाला गया है और शांति की प्रतिस्थापना शंखनाद से की गई है। इस त्रि–आयामी मूर्तिशिल्प में शंख व गदा को चारों तरफ से कुंडलित वास्तुकला के रूप में प्रस्तुत किया गया है। गदा को प्रतीक के रूप में भीम का आभास एवं संकल्प की दृढ़ता का अनायास दर्शन कराने का प्रयास किया है। शिल्प में शंख व आस्था के प्रतीक बलशाली भीम के बल को गदा के रूप में चिरस्थाई प्रदर्शित किया है।

Dinesh Sewal
Rohtak, Haryana

दिनेश सेवाल

हरियाणा, झज्जर के दिनेश कुमार ने कला शिक्षा के क्षेत्र में रोहतक से कला स्नातक एवं ग्वालियर से कला निष्णात की उपाधि हासिल की है। मूर्तिशिल्प के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से सक्रिय हैं।

अलख फरियाद में प्रवेश

अदृश्य रस से परिपूर्ण इस शिल्प में एक लघु कथा को प्रदर्शित किया है। महाभारत यद्ध के दौरान टिटहरी/कुररी पक्षी ने दो अंडे दिए थे और यह आभास हुआ कि यद्ध के पश्चात् कुछ नहीं बचेगा। उस क्षण उसने भगवान श्री कृष्ण से रक्षा हेतु फरियाद की, उसी क्षण अचानक इंद्र के ऐरावत हाथी के गले की घंटी ने पक्षी व अंडों को ढक दिया और उनको सुरक्षा प्रदान की। अतः कलाकार ने अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक विशाल घंटी ओर पक्षी व उसके अंडों को सौंदर्यपूर्ण रूप से कलात्मक दृष्टिकोण का आयाम स्थापित किया। यह मूर्तिशिल्प श्रद्धा, फरियाद एवं आस्था में अमरता को दर्शाता है।

Goldi

Kurukshetra, Haryana

गोल्डी

हरियाणा राज्य के कुरूक्षेत्र जिले के जोगना खेड़ा गांव से सम्बन्ध रखने वाले गोल्डी कुमार जो कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में कला निष्णात की उपाधि हेतु अंतिम वर्ष के छात्र हैं।

युद्ध में संस्कृति की अप्रितम अभिव्यक्ति

मूर्तिकला का अभिनव कौशल हृदय कौशल के आधुनिक शिल्प में साफ झलकता है। इस अद्भुत विशाल मूर्तिशिल्प में एक विशाल कछुआ जो निरन्तरता का प्रतीक है वह पीछे मुड़कर देख रहा है कि आज भी इस पावन धरा पर सौहार्द प्यार, मोहब्बत और विकास कायम है या नहीं। कछुए की पीठ पर एक ज्यामितीय आकार सुदर्शन चक्र मस्तक तिलक के रूप में बनाया है, जिसमें शकुनि के पाशे एवं युद्ध के परिणाम, जो तिलक स्थान पर केंद्रित है, वहीं कुविचार व सुविचार, सकारात्मक, नकारात्मक व कुटिल भावनाओं का उद्गम स्थल हैं जो लक्ष्य केंद्रित हो जाता है। इसके साथ ही उसके ऊपर युद्ध की दयनीय स्थिति एवं जल के रूपों में अश्रु सौहार्द व कल्याण की स्थिति को प्रदर्शित किया है एवं उसके पर शांति व विकास की ध्वनि हेतु सौंदर्यपूर्ण शंख को स्थापित किया है। जिसकी गूंज राज्य के निरन्तर विकास को प्रदर्शित करती है। इस मूर्तिशिल्प में आकर्षण, लयात्मकता, सौदर्य एवं संकल्प की दृढ़ता के अनायास दर्शन होते हैं। संघर्ष के द्योतक संस्कृति एवं इतिहास की सांकेतिक अभिव्यक्ति का भी संदेश दे रही है। जो दर्शक के मन में कोतुहल पैदा करती है। इस मूर्तिशिल्प का सौंदर्य अप्रितम है।

Hirday Kaushal

Art and Cultural Officer Sculpture
Mentor-cum Camp Coordinator

हृदय कौशल

हृदय कौशल चरखी दादरी, हरियाणा की पृष्ठ भूमि से सम्बन्ध रखते हैं। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय से तीन स्नातकोतर उपाधि उपरान्त दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट से मूर्तिशिल्प में कला स्नातक व कला निष्णात की उपाधि हासिल की है। राज्य में आधुनिक लुप्त होती मूर्तिकला के विकास का प्रवाह नवीनतम प्रयोगों के साथ बनाने में व्यस्त हैं। अनेकों पुरस्कारों से सम्मानित हृदय कौशल कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, हरियाणा में कला एवं सांस्कृतिक अधिकारी (मूर्तिकला) के पद पर कार्यरत हैं। राज्य में अनेकों राष्ट्रीय स्तर के मूर्तिशिल्प शिविर आयोजित कर राज्य के युवा कलाकारों को नए पायदान हेतु राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ख्याति हेतु संघर्षरत हैं।

असंतुलित योजक
पक्ष-विपक्ष

इस कलाकृति में काल्पनिक व प्रतीकात्मक दो रूपों को शिलपित किया है। ज्यामितीय शैली में वृद्ध व लघु पक्ष को सार्थक रूप से अद्‌भुत अभिव्यक्ति के साथ शिलांकित करने का प्रयास किया है। जिसमें बड़े रूप को कौरव और छोटे रूप को पांडव कल्पना स्वरूप माना है, जो स्पष्ट रूप से युद्ध में देखे गए असंतुलन को प्रत्यक्ष दर्शाता है। प्रतिस्पर्धियों के बीच कोई समानता नहीं है फिर भी यह दर्शाता है कि अच्छाई और सच्चाई की मजबूती हमेशा बुराई पर विजय हासिल करती है, इस पक्ष में समय निर्धारित नहीं होता। निरंतर रूप से कुटिल कर्मों एवं नकारात्मक उर्जा पर सकारात्मकता एवं सुकर्मों व सत्य की हमेशा विजय होती है। कलाकार ने इस आधुनिक मूर्तिशिल्प में दृढ़तापूर्वक यह संदेश दिया।

Harpal
Sirsa, Haryana

हरपाल

हरियाणा के सिरसा जिला के शेखुपुरिया गांव की पृष्ठ भूमि से सम्बन्ध रखते हैं। कला स्नातक चण्डीगढ़ तथा कला निष्णात मूर्तिकला की उपाधि शांति निकेतन से प्राप्त कर स्वतंत्र रूप से कला के क्षेत्र में नीवन प्रयोगों के साथ कला शोध में जुटे हैं।

सैनिक जीवन और संघर्ष

इस शिल्प में 75 वें आजादी के अमृत महोत्सव पर सैनिकों के परिवेश से संस्कृति की उत्पति राष्ट्र सुरक्षा एवं शौर्य सहित सैनिक की जीवन यात्रा को दर्शाया गया है कि किस प्रकार राष्ट्र सुरक्षा और युद्ध में सैनिकों का चोली–दामन का सम्बन्ध है। शिल्प में मुख्य रूप से राष्ट सम्मान में अशोक चक्र के साथ आजादी के अमृत महोत्स को कर्मठता व समृद्धि के उत्कर्ष को सांकेतिक रूप में प्रदर्शित किया गया है कि किस प्रकार सैनिक जीवन सेवानिवृति उपरान्त मन प्रसन्न की अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करता है। वह राष्ट सुरक्षा की खुशी जाहिर करता है। मूर्तिशिल्प में सैनिकों के जीवन सम्बन्धित वस्तुओं को भावनाओं सहित प्रदर्शित करने का प्रयास किया है। इसमें एक संदूक बनाया है, जिसमें सैनिक की आवश्यक सामग्री है एवं उसके उपर उसका बिस्तर बन्द जो निरन्तर सेवा काल में उसके साथ रहता है। राष्ट्र भावना से ओत–प्रोत यह मूर्तिशिल्प राष्ट्रीय एकता, अखंडता व शौर्यता का परिचायक है।

Kuldeep Singh

Karnal, Haryana

कुलदीप सिंह

कुलदीप सिंह हरियाणा के करनाल की पृष्ठ भूमि से सम्बन्ध रखते हैं। कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से कला निष्णात मूर्तिकला की उपाधि लेकर कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग में अध्यापन क्षेत्र में व्यस्त हैं।

युद्ध विराम का अहलाद

इस बेजौड़ मूर्तिशिल्प में युद्ध के संघर्ष के द्योतक के रूप में अदभुत ज्यामितीय आयाम को प्रस्तुत किया गया है। महाभारत के यद्ध में अधर्म पर धर्म की विजय एक प्रतीकात्मक समकालीन अभिव्यक्ति है जो प्रलोभनों, कुटिल कर्मों और नकारात्मक उर्जाओं के खिलाफ जंग का प्रादुर्भाव करती है। इस शिल्प में प्रतीकात्मक ऐरावत हाथी की पीठ पर एक संदूक बनाया गया है, जिसमें चौपड़ की गोटी को बंद किया गया है एवं उसके उपर एक शंख स्थापित किया है जो शुभ कार्यों के अहलाद को प्रदर्शित करता है। कलाकार की भावना अनुसार सृष्टि में दोबारा ऐसा चौपड़ न खेला जाए कि कामना सांकेतिक अभिव्यक्ति को दर्शाती है एवं धार्मिकता को अपने भीतर पुर्नस्थापित कर सत्य, प्रेम, प्रकाश व विकास की शुद्ध दिव्य सत्ता बने के संकल्प की दृढ़ता को सार्थक रूप से प्रदर्शित करने का प्रयास किया है।

Mahipal

Kamlanagar, Rohtak

महिपाल

हरियाणा के सोनीपत क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्ध रखने वाले महिपाल अध्यापन के साथ–साथ स्वतंत्र कलाकार हैं एवं मूर्तिशिल्प के क्षेत्र में अभिनव प्रयोग कर रहे हैं।

अकथनीय वाद-विवाद की प्रतिध्वनि

इस सुंदर मूर्तिशिल्प में चौमुखी मुख के साथ मुकुट के संघर्ष व सम्मान को बखूबी दर्शाया है। कल्पनाशील इस मूर्तिशिल्प में संततियों ने सदियों से सिंघासन के संघर्ष का संताप रहा है। शिल्प में दुर्योधन की दुर्बुद्धि ने दुर्दिन दिए, जिसका दुःख, दंश उस वंश ने झेला। अब भी वही अर्थहीन असुर संग्राम अहर्निश अनवर्त जारी है। मुकुट की मोह माया है, जिसका आवेग हर ओर छाया है। इस शिल्पांकन में मुकुट की गरिमा व चारों दिशाओं में ख्याति के साथ संघर्ष एवं विकास की भावना को दर्शाया है।

Madan Saini

Chang, Haryana

मदन

हरियाणा के चांग भिवानी के ग्रामीण परिवेश से सम्बन्ध रखते हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय से कला निष्णात मूर्तिकला की उपाधि लेकर आधुनिक मूर्तिशिल्प में नए–नए प्रयोगों का प्रयास कर रहे हैं।

आजादी का शौर्य स्तम्भ

इस शिल्प में आजादी के भाव को दर्शाया है। निम्न तल से शीर्ष तक राष्ट्र सुरक्षा में सैनिकों के योगदान एवं शौर्य को दर्शाने वाला यह मूर्तिशिल्प शौर्य स्तम्भ का रूप है। शिल्प उन सभी शहीदों को याद करने का प्रतीक है, जिन्होंने कर्तव्य के दौरान अपने प्राण न्यौछावर किए। प्राणों की आहुति देने वाले सभी शहीदों को समर्पित यह शिल्प अशोक चक्र एवं अमर जवान ज्योति पर नतमस्तक होने का परिचायक है। इस अदभुत मूर्तिशिल्प में राष्ट्र भावना व 75वें आजादी के अमृत महोत्सव को बखूबी दर्शाया गया है।

Monu Khanderwal

Jind, Haryana

मोनू

हरियाणा के जीन्द जिले में उचाना कलां से सम्बन्ध रखने वाले मोनू कुरूक्षेत्र से कला निष्णात मूर्तिकला की उपाधि हासिल कर शिल्प के क्षेत्र में नवीनतम प्रयोगों हेतु सक्रिय हैं।

सन्देश के आयाम
प्रतीक चिन्ह

इस सुंदर मूर्तिशिल्प में भगवान विष्णु द्वारा धारित सुदर्शन चक्र, शंख और गदा क्रमशः लक्ष्य के प्रति दृढ़ता, सकारात्मक ऊर्जा और न्यायप्रणाली के प्रतीक के रूप में प्रदर्शित किया है। एकाग्रता और सत्यता का प्रतीक कमल का पुष्प मायारूपी कीचड़ से असंपृक्त रहकर मोर पंखी प्रेम से ओत प्रोत होकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। जीवन में लक्ष्य, आचार–विचार तथा दंड की शुचिता अनिवार्य एवं ग्राह्य है। कुरूक्षेत्र की धरा पर इस शिल्प का यही महत्त्व है कि भगवान के अनुरूप ही मानव जीवन सार्थक है।

Meenaxi sharma

Jind, Haryana

मीनाक्षी शर्मा

हरियाणा के कुरूक्षेत्र जिले की पावन भूमि से सम्बन्ध रखती हैं। दोहरी निष्णात उपाधि प्राप्त कर राज्य में निरन्तर आधुनिक मूर्तिकला में अभिनव प्रयोग कर रही हैं।

धार्मिक प्रतीक चिन्ह की अभिव्यक्ति

सधे हाथों से गढ़े इस अदभुत मूर्तिशिल्प में मूल रूप से चारों दिशाओं में शंख, कलश, वट वृक्ष एवं शिवलिंग को संजोया है। वर्गाकार ज्यामितीय आयाम वाला यह शिल्प मूल रूप से सौंदर्य का अदभुत परिचायक होने के साथ–साथ आस्था की सीधी–साधी संस्कृति को दर्शाता है। महाभारत के इतिहास को कुरूक्षेत्र की धरती पर दर्शाते ज्योतिसर वट वृक्ष की परिकल्पना एवं इसके साथ चारों दिशाओं में अदभुत प्रतीक चिन्हों की परिकल्पना अदभुत अराधना का रूप है। इस शिल्पांकन को निहारते ही अंतर्द्वंद्व शांत हो जाता है और कर्म एवं पूजनीय परम्पराओं का मार्ग खोलता है। क्षण में आकर्षित कर देने वाला यह मूर्तिशिल्प मनोरम है।

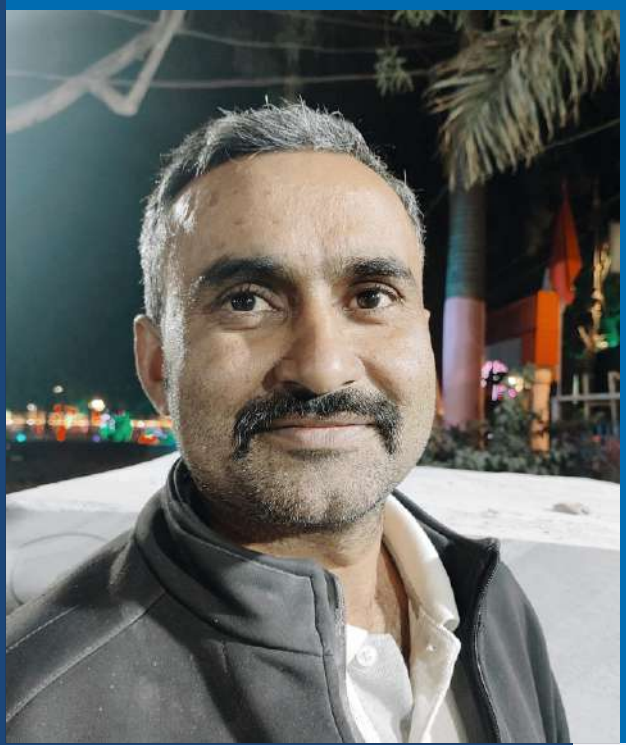

Nema Ram

Nathdwara, Rajasthan

नेमा राम

नेमा राम राजस्थान के सुमेरपुर के पाली गांव से सम्बन्ध रखते हैं। नाथद्वारा से कला निष्णात की उपाधि हासिल कर स्वतंत्र रूप से आधुनिक मूर्तिशिल्पों का निरंतर निर्माण कर रहे हैं।

भौतिकता और उन्माद

इस शिल्प में कल्पनाशील दो मुखों को पाषाण शिला में आंखों पर गांधारी की कल्पना स्वरूप पट्टियां बांधे हुए दर्शाया गया है। कलाकार की कल्पना है कि इस क्षणभंगुर संसार में सब कुछ मोह–माया में लिप्त है। भौतिकता और उन्माद ने महाभारत जैसे युद्ध दिए। इसी महत्वाकांक्षा के कारण हमारे आपस में भेदभाव और लड़ाईयां पैदा हो रही हैं और होती रहेंगी। इस पट्टी का प्रयोग भौतिकता की महत्वाकांक्षा को दर्शाने के लिए किया गया है, जिसके वश में आकर हम सारे कृत्य करते हैं और कुछ भी करने को आतुर रहते हैं। शांत मुखाकृति वाली यह मूर्तिशिल्प भटके हुए इंसान का संदेश दे रही है।

Narender

Jhajjar, Haryana

नरेंद्र

हरियाणा के रोहतक जिले के अजायब गांव से सम्बन्ध रखने वाले नरेन्द्र दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्टस से कला निष्णात की उपाधि हासिल कर स्वतंत्र रूप से राज्य में शिल्प के क्षेत्र में बखूबी काम कर रहे हैं।

ज्ञान की पोटली

इस मूर्तिशिल्प में गीता के असीम ज्ञान को एक बहुत बड़ी पोटली के रूप में खुली गीता के उपर दर्शाया गया है, पोटली के पांच मुंह बनाए गए हैं। जो पांचों पांडवों के ज्ञान, दृढ़ता, बल, एकाग्रता, निपुणता व स्थिरता को दर्शाते हैं। ये पांचों मुख काल्पनिक रूप से पांच पांडवों का स्वरूप हैं। इसमें ज्ञान स्वरूप पवित्र ग्रंथ गीता को आधार माना है। कलाकार ने अपनी कल्पना में गीता के उपदेश पोटली स्वरूप जीवन की कर्मठता और समृद्धि के उत्कर्ष को सांकेतिकता दे रहा है।

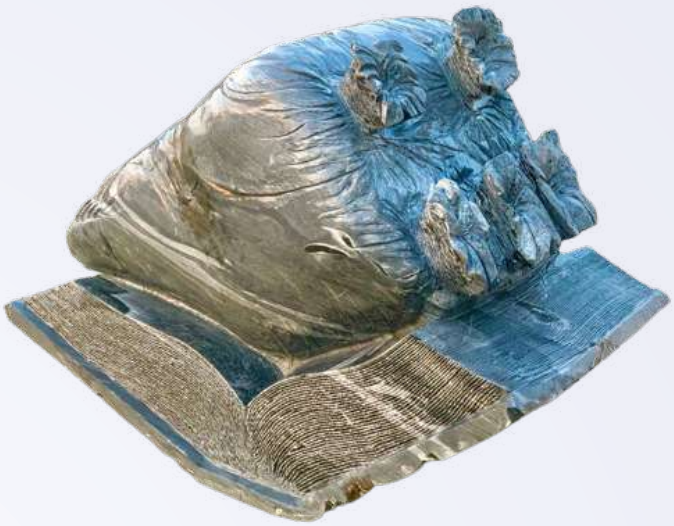

Prince Sharma

Kurukshetra, Haryana

प्रिन्स शर्मा

राज्य के कुरूक्षेत्र से सम्बन्ध रखते हैं। इन्होंने कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से फाईन आर्टस में कला स्नातक की उपाधि हासिल की है।

लक्ष्य भेदी गाण्डीव

इस अद्भुत शिल्प में ज्यामितीय आलंकरण और आयामों द्वारा अद्भुत गाण्डीव की उत्पत्ति को दर्शाया है। काल्पनिक रूप से कला संयोजन में कर के अग्र भाग व गाण्डीव के मध्य और शीर्ष को बखूबी सौंदर्यपूर्ण रूप से बाण सहित शिलांकित किया गया है। ब्रह्म जी ने बांबी पर उगे सुंदर बांस को काट कर भगवान विश्वकर्मा को दे दिया और विश्वकर्मा ने उससे तीन धनुष बना पिनाक, शारंग और गाण्डीव इन तीनों धनुषों को ब्रह्मा जी ने भगवान शंकर को समर्पित कर दिया। इसे भगवान शंकर ने इन्द्र को दिया और फिर बाद में अग्नि देव के द्वारा यह अर्जुन के पास पहुँचा अर्जुन ने इस धनुष के साथ असंख्य युद्ध जीते, यह धनुष अत्याधिक शक्तिशाली और सुदृढ़ व लक्ष्य भेदी था। कलात्मक दृष्टिकोण से परिपूर्ण यह मूर्तिशिल्प दर्शकों में कोतुहल पैदा करने वाला है।

Rakesh Patnayak

Sundergarh, Odisha

राकेश पटनायक

उड़ीसा के सुंदरगढ़ से सम्बन्ध रखने वाले राकेश पटनायक कला निष्णात की उपाधि हासिल कर चुके हैं। कठिन परिश्रम के साथ स्वतंत्र रूप से राष्ट्र में आधुनिक मूर्तिशिल्पों पर बखूबी काम कर रहे हैं।

लक्ष्य एकाग्रता व स्त्रोत

इस मूर्तिशिल्प में ज्ञान, कला, संस्कृति के साथ योग एवं रियाज़ की अदभुत परिकल्पना की है। धर्नुविद्या में पारंगत अर्जुन द्वारा अपने लक्ष्य भेदने का अदभुत संगम प्रदर्शित किया है। लक्ष्य की उंचाईयों को छूने और उसमें पारंगत होने की निपुणता अर्जुन की गाण्डीव के साथ साक्ष्य है। यह मूर्तिशिल्प हिंदू महाकाव्य महाभारत की एक छोटी सी कहानी को दर्शाती है। अर्जुन ने हमेशा अपनी प्राथमिकताओं को स्थान दिया है। यह उनकी अचूक लक्ष्य भेदी दूरदर्शिता कल्पना स्वरूप मूर्तिशिल्प में आभासित है। जब उन्होंने राजकुमारी द्रौपदी स्वयंवर जीतने के लिए मीन नेत्र भेदने हेतु प्रतियोगिता में प्रवेश किया और लक्ष्य प्राप्ति की। यह मूर्तिशिल्प एकाग्रता, सहनशीलता व सहयोग के साथ–साथ अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के साथ सौंदर्यपूर्ण है।

Rahul

Rewari, Haryana

राहुल

हरियाणा के रेवाड़ी की पृष्ठ भूमि से सम्बन्ध रखते हैं। कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से कला निष्णात मूर्तिकला की उपाधि लेकर कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग में अध्यापन क्षेत्र में व्यस्त हैं।

लक्ष्य संकल्प एवं 75वें आजादी का अमृत महोत्सव

निपुण व सधे हाथों के कौशल से पाषाण मूर्तिशिल्प की रचना प्रक्रिया कलात्मक रूप से सुडौल व रचनात्मक एवं कल्पनात्मक है। यह शिल्प बेजौड़ संघर्ष के द्योतक के रूप में राष्ट्र को समर्पित सैनिकों का जज़्बा राष्ट्रीय एकता व सद्भावना को अमर जवान स्मारक में शस्त्र सम्मान व हैलमेट के रूप में प्रदर्शित किया है। 75 वें आजादी के अमृत महोत्सव के साथ अर्जुन द्वारा मछली की आंख के मध्य एकाग्रता, सहनशीलता व सहयोग के साथ अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रेरणा दी है साथ ही आधारभूत स्तम्भ चिरकाल तक इसके गवाह के रूप में बनाया गया है। सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मूर्तिशिल्प में हरियाणवी बीजणा व मंदिरों की घंटियों एवं गीता के श्लोकों को उत्कीर्ण कर कलाकारा ने नवीन प्रयोगों को समाहित किया है। राज्य के सामाजिक परिवेश गीता एवं संस्कृति के ताने–बाने से बुने इस पूरे शिल्प में अदभुत सौंदर्य है।

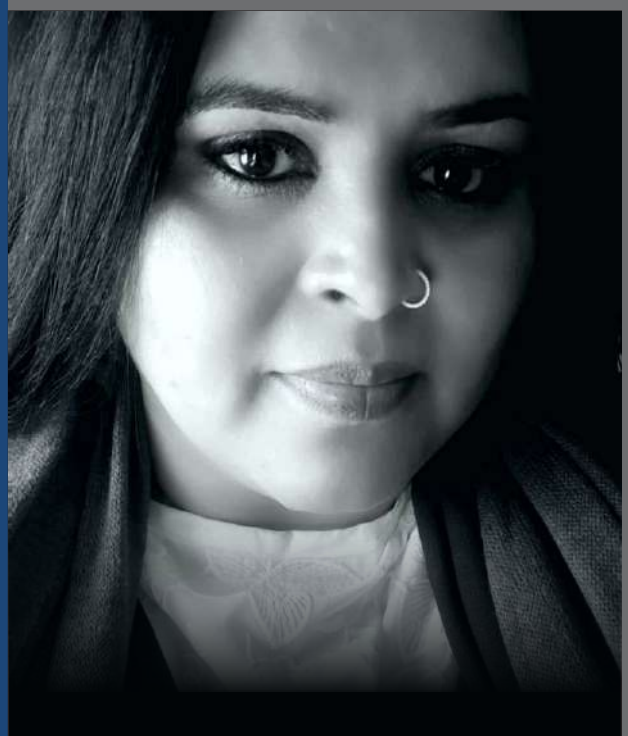

Dr .Sneha Lata Parsad

Telangana

डॉ. स्नेहलता प्रसाद

डॉ. स्नेहलता प्रसाद तेलंगाना की निज़ामी परम्परा काकातिया एवं कलात्मक पठारीय पृष्ठ भूमि से सम्बन्ध रखती हैं। राजस्थान के जयपुर विश्वविद्यालय से कला निष्णात में प्रथम स्थान एवं विद्या वाचस्पति की उपाधि प्राप्त कर मूर्तिकला व चित्रकला के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से अभिनव प्रयोगों के साथ–साथ कलादीर्घा का संचालन करते हुए कला समाज सेवा में निरंतर प्रयासरत हैं। डॉ. स्नेहलता प्रसाद आज राष्ट्र के हुनरबाज़ मूर्तिकारों में से एक हैं।

पीपल, प्रकृति और कृष्ण संवाद

प्रस्तर में तराशा गया यह मूर्तिशिल्प महाभारत के युद्ध से पहले श्री कृष्ण और अर्जुन के बीच गीता के रूप में हो रहे संवाद का प्रतीकात्मक एवं काल्पनिक दृश्य है। यह गोलाकार आकृति अनन्त चक्र है एवं अर्जुन के बीच गीता रूप में हो रहे संवाद का प्रतीकात्मक–काल्पनिक दृश्य है। मूल रूप से पीपल वृक्ष ही श्री कृष्ण हैं तथा जड़ों–चरणों में सत्यान्वेशी अर्जुन कच्चे घड़े के रूप में है जो गीता ज्ञान अमृत संचित कर रहे हैं। सभी वृक्षों में श्रेष्ठ वृक्ष पीपल कहकर खुद को परिचित करवाता है। घड़े के शीर्ष पर कमल पुष्प खिला है जो गीता ज्ञानामृत के प्रभाव में आकर परम सौंदर्य धारण कर रहा है। चारों तरफ से पीपल पत्र से अलंकृत यह मूर्तिशिल्प अदभुत संयोजन के साथ आध्यात्मिकता की उंचाईयों को भी छू रहा है।

Savip Raj

Sonipat, Haryana

स्वीप राज

हरियाणा के सोनीपत की पृष्ठ भूमि से सम्बन्ध रखते हैं। खैरागढ़ से कला निष्णात की उपाधि प्राप्त कर मध्यप्रदेश, अमरकंठक से विद्या वाचस्पति उपाधि हेतु क्रियाशील हैं एवं साथ ही मूर्तिशिल्प में नीवन प्रयोगों और शोध में व्यस्त हैं।

चारों दिशाओं में अभिरूप की समृद्धि

मूर्तिशिल्प में मूल रूप से चारों दिशाओं में तन, मन व आत्मा के योजक को बेहद सुरूचि से तराशने का कौशल है। इसमें चारों दिशाओं में चार मुख दर्शाए गए हैं तथा शून्य रूप में शीर्ष पर अद्भुत उत्कीर्ण है। शक्ति कलश से अभिव्यक्ति स्वरूप चारों मुखों का प्रतिपादन ब्रह्म, शून्य, वेद, चेतना को चतुरव्यूह के रूप में दर्शाया गया है। संयोजन के बारे एक संक्षिप्त वर्णन महत ब्रह्म है परा प्रकृति ब्रह्म का आत्म गोपन है। स्वयं को छिपा लेना एवं चारों दिशाओं में ब्रह्म प्राप्ति हेतु योग अराधना के साथ सनातन धर्म का परिचायक यह मूर्तिशिल्प अराधना हेतु प्रेरित करने वाला है। सौंदर्यपूर्ण एवं गतिशील यह शिल्प आध्यात्मिकता की ऊंचाईयों को दर्शाता है।

Sushank

Mehrauli, New Dehli

सुशांक कुमार

हरियाणा के गुरूग्राम की पृष्ठ भूमि से सम्बन्ध रखने वाले जामिया मीलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय से कला निष्णात मूर्तिकला की उपाधि प्राप्त कर स्वतंत्र रूप से नीवनतम कला प्रयोगों के साथ निरन्तर कला साधना में जुटे हैं।

प्रगति का प्रतिबिम्ब
धर्म-अनन्त चक्र

इस खूबसूरत मूर्तिशिल्प में अद्भुत सौंदर्य समाहित है। चक्र के साथ धर्म को मानवीय रूप में प्रतिपादित करता हुआ यह मूर्तिशिल्प सनातन धर्म की सुरक्षा एवं विकास का प्रतीक माना है। काल्पनिक रूप से शिल्पी का मानना है कि धर्म की रक्षा हेतु ईश्वर स्वयं अवतरित होते हैं। इस पक्ष में गढ़ा गया यह मूर्तिशिल्प निरन्तर विकास का प्रतीक रूप है क्योंकि अधिकतर समस्याओं का निदान गीता के उपदेश और चक्र दर्शन में है। सांकेतिक अभिव्यक्ति संकल्प और दृढ़ता के साथ संयोजित कर यह मूर्तिशिल्प सौंदर्य एवं विषयवस्तु दोनों में अप्रितम है। चक्र की निरन्तरता सदैव समाधान व विकास का प्रतीक होने के साथ कलात्मक संयोजन को सौंदर्य स्वरूप प्रस्तुत किया गया है।

Virendra Kumar
Chandigarh

वीरेन्द्र कुमार

उत्तराखंड की पृष्ठ भूमि से सम्बन्ध रखने वाले हैं। चण्डीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्टस से कला निष्णात की उपाधि प्राप्त की है। कला अध्यापन के साथ–साथ स्वतंत्र रूप से कला सृजन के कार्य में नवीनतम प्रयोग कर रहे हैं।

विषयवस्तु परामर्श

.....

श्री कंवर पाल गुर्जर
कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग तथा
संस्कृति मंत्री, हरियाणा

परिकल्पना एंव कार्यशाला निर्देशन

.....

डॉ. डी. सुरेश
प्रधान सचिव
कला एवं सांस्कृतिक विभाग

श्री विजय सिंह दहिया
सदस्य सचिव
के0 डी0 बी0 कुरूक्षेत्र

परिकल्पना
श्रीमती प्रतिमा चौधरी
पूर्व निदेशिका
कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग

संयोजन
श्री महावीर कौशिक
निदेशक
कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग

भाषा शिल्प - विषय वस्तु

.....

श्री हृदय कौशल,
कला एवं सांस्कृतिक अधिकारी (मूर्तिकला),
कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, हरियाणा

Art and Cultural Affairs Department, Haryana

“Growth Never Ending Process”

Stone Sculpture by

HIRDAY KAUSHAL, Chandigarh

Art work created during
Stone Sculpture Workshop

Organized by: DACA

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

युद्ध में संस्कृति की अप्रितम अभिव्यक्ति

Stone Sculpture By

HIRDAY KAUSHAL

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

---

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

लक्ष्य संकल्प एवं 75वें आजादी का अमृत महोत्सव

Stone Sculpture By

DR .SNEHA LATA PARSAD

Sculptress

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

---

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

सन्देश के आयाम प्रतीक चिन्ह

Stone Sculpture By

MEENAXI SHARMA

Sculptress

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

---

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

धार्मिक प्रतीक चिन्ह की अभिव्यक्ति

Stone Sculpture By

NEMA RAM

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

---

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

महाभारत और पंच स्तम्भ

Stone Sculpture By

ARUNDHATI CHAUDHARY

Sculptress

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

---

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

लक्ष्य भेदी गाण्डीव

Stone Sculpture By

RAKESH PATNAYAK

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

आज़ादी का अमृत महोत्सव

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

लक्ष्य एकाग्रता व स्त्रोत

Stone Sculpture By

RAHUL

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

---

आज़ादी का अमृत महोत्सव

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

युद्ध विराम का अहलाद

Stone Sculpture By

MAHIPAL

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

---

आज़ादी का अमृत महोत्सव

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

युद्ध विराम का अहलाद

Stone Sculpture By

MAHIPAL

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

---

आज़ादी का अमृत महोत्सव

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

अकथनीय वाद-विवाद की प्रतिध्वनि

Stone Sculpture By

MADAN SAINI

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

---

आज़ादी का अमृत महोत्सव

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

शंख प्रतिध्वनि

Stone Sculpture By

AMIT KUMAR

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

---

आज़ादी का अमृत महोत्सव

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

आजादी का शौर्य स्तम्भ

Stone Sculpture By

MONU KHANDERWAL

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

आज़ादी का अमृत महोत्सव

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

समय, ज्ञान, संस्कृति

Stone Sculpture By

ANUP

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

---

आज़ादी का अमृत महोत्सव

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

भौतिकता और उन्माद

Stone Sculpture By

NARENDER

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

---

आज़ादी का अमृत महोत्सव

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

चारों दिशाओं में अभिरूप की समृद्धि

Stone Sculpture By

SUSHANK

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

---

आज़ादी का अमृत महोत्सव

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

भीमास्त्र, कलात्मक ज्योमितीय आयाम

Stone Sculpture By

DINESH SEWAL

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

---

आज़ादी का अमृत महोत्सव

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

असंतुलित योजक पक्ष-विपक्ष

Stone Sculpture By

HARPAL

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

---

आज़ादी का अमृत महोत्सव

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

ज्ञान की पोटली

Stone Sculpture By

PRINCE SHARMA

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

अलख फरियाद में प्रवेश

Stone Sculpture By

GOLDI

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

सैनिक जीवन और संघर्ष

Stone Sculpture By

KULDEEP SINGH

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

पीपल, प्रकृति और कृष्ण संवाद

Stone Sculpture By

SAVIP RAJ

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator

20 DAYS

NATIONAL CONTEMPORARY STONE CARVING SCULPTURE CAMP/SYMPOSIUM 2021

ART AND CULTURAL AFFAIRS DEPARTMENT, GOVERNMENT OF HARYANA

IN COLLABORATION WITH

KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD

पाषाण प्रसंग- 3

Dec 1st - Dec 20th - 2022

प्रगति का प्रतिबिम्ब धर्म-अनन्त चक्र

Stone Sculpture By

VIRENDRA KUMAR

Sculptor

Venue: Purushottam Pura Bagh Brahma Sarovar Kurukshetra, Haryana
Art and Cultural Officer Sculpture Mentor-cum Camp Coordinator